International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.9 Issue.4 Mar -Apr 2022

लॉकडाउन और अर्थव्यवस्था खेलो क संदर्भ में एक विवेचन

डॉ. हेमंत वर्मा
शारीरिक शिक्षा विभाग जे ई एस महविद्यालय जालना, महाराष्ट्र
vermahj@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत लेख भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्विक कोरोना महामारी के द्वारा पड़ने वाले प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष परिणामो का अवलोकन है। भारतीय खेल व्यवसाय की स्थिति व सुधारो पर पड़ने वाले असर को लेखक ने अपने विवेचन मे दर्शाने का एक लघु प्रयास प्रस्तुत लेख के माध्यम से किया गया है।

प्रस्तावना

अर्थव्यवस्था का पहिया देश के बड़े-छोटे मझोले उद्योगों, गृह उद्योग, संगठित और असंगठित क्षेत्रों, तथा पर्यटन, परिवहन, कृषि और शिक्षा, इन सभी के एक दूसरे पर निर्भरता और सहयोग का एकल परिणाम है, से चलता है। किंतु बीते महामारी काल में देश भर की आर्थिक गतिविधियों पर एक ब्रेक सा लगा हुआ था जिसका सबसे ज्यादा असर रोज़गार पर पड़ा है। मार्च-2020 से जारी 21 दिनों के लॉकडाउन का असर अर्थव्यवस्था के लगभग हर क्षेत्र पर पड़ा है। यदि आईटी क्षेत्र को इससे अलग किया जाए तो भारत की अर्थव्यवस्था पटरी पर लौटने के लिए, काफी समय लेगी ऐसा अर्थशास्त्रियों का मानना है। पिछले महीनों में हुए लॉकडाउन से सात से आठ लाख करोड़ रुपयों का नुकसान हो चुका है। लोगों के रोजगार छिन चुके हैं। कई जगहों पर कर्मचारियों की छटनी की गई तो कई व्यवसाय ही बंद कर दिए गए। कारण देशव्यापी बंद के चलते ज्यादातर कल-कारखाने बंद ही रहे। उड़ाने निलंबित करनी पड़ी, ट्रेनों के परिचालन को सीमित करना पड़ा और वाहनों की आवाजाही भी बंद करने के कारण एक चक्का जाम जैसी परिस्थिति उत्पन्न हो गई थी। इसके कारण अन्य देशों की निर्यात/आयात व्यवस्था भी रुक गई, जरूरी वस्तुओं को छोड़ अन्य उत्पादों की खपत भी कम हो गई है।सेंट्रल इंस्टीट्यूट रिसर्च ने एक सर्वेक्षण में इस तथ्य को रखा है। कि महामारी ऐसे समय पर आई जब भारतीय अर्थव्यवस्था में साहसिक राजकोषीय और मौद्रिक उपायों के बाद पुनरुद्धार के संकेत मिल रहे थे। और इस संकट के कारण देश फिर से 2020-21 में एक अंक में ग्रोथ दर्ज कराने के मार्ग पर पहुंच गया है।

विगत दिनों एक्यूट रेटिंग्स एंड रिसर्च लिमिटेड ने अनुमान जताया था कि लॉकडाउन से अर्थव्यवस्था को लॉकडाउन के दौरान हर रोज करीब 464 करोड डॉलर, भारतीय रुपयों में लगभग 35,000 करोड रुपए से अधिक का नुकसान हो रहा है।

वही छोटे दुकानदारों के देशव्यापी संगठन "कैट" के अनुसार देशव्यापी बंद के कारण रिटेल कारोबार में लगभग 2,28000 करोड़ रुपए का आर्थिक नुकसान झेलना पड़ा है। जो सीधा देश के रिटेल सेक्टर के 7 करोड़ छोटे, मझोले और बड़े दुकानदारों पर असर डाल चुका है। इसी तरह रियल एस्टेट क्षेत्र में भी बड़े नुकसान की बात सामने आई है।

ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस के द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार लॉकडाउन के कारण प्रति ट्रक 2,200 रूपये के नुकसान के आधार पर देखें तो ट्रक ट्रांसपोर्ट कारोबार में लॉकडाउन के दौरान पहले 15 दिनों में ही लगभग 35,200 करोड रुपए का नुकसान हुआ है। जिसका प्रमुख कारण था एक करोड़ ट्रकों का सड़कों पर ना चल पाना। इस प्रकार देखें कि आर्थिक कमियों को फिर से पटरी पर लाने के लिए राष्ट्र भर को समय रहते अनलॉक करना करना होगा, जिससे आने वाले 3-4 महीनों में कुछ सकारात्मक परिणाम दिखाई दें।

आर्थिक विकास

हालांकि कई अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों ने 2020-21 के लिए भारत की आर्थिक विकास दर को आकलन में कटौती की है। विश्व बैंक के अनुसार देश की विकास दर 2020-21 में 1.5 से 2.8% रहने का अनुमान लगाया था जो सही साबित हुआ

किंतु भारतीय आर्थिक सर्वेक्षण में 2021-22 की पहली तिमाही में भारत की सकल घरेलू उत्पाद की दर का 11% रहने का अनुमान लगाया गया है। जो अर्थव्यवस्था को उत्साह के पर्यावरण में ले जाता है।

आज हालांकि लॉकडाउन से अनलॉक की प्रक्रिया हो चुकी है। और कोरोना के मरीज भी काफी कम मिल रहे हैं। जिसके कारण काम-धंधे फिर से शुरू हो रहें हैं। फिर भी लॉकडाउन के कारण रोजगार के निराशाजनक आंकड़ों को नकारा नहीं जा सकता, रोजगार के अवसर निर्मित करने वाले क्षेत्रों में विनिर्माण, कृषि, उत्पादन क्षेत्र, आयात, निर्यात, परिवहन व टूरिज्म, चिकित्सा आदि महत्वपूर्ण क्षेत्रों में पिछले कई महीनों से सुस्त पड़ चुकी व्यवस्था अब गतिशील प्रतीत होती है। निश्चित ही आने वाले वार्षिक आकलनो में भारतीय अर्थव्यवस्था पटरी पर आ जाएगी ऐसी आशा प्रज्वलित होती है।

अनलॉक के बाद आज की परिस्थिति:

आज यद्यपि कोरोना की रोकथाम के लिए सर्वाधिक प्रचलित वह मान्य टीका करण भारतीयों के लिए एक ढाल के स्वरूप में बनकर सामने आया है। विश्व के विस्तृत व इतने बड़े लोकतांत्रिक ढांचे वाले सर्वाधिक जनसंख्या वाले राष्ट्र भारत की टीकाकरण नीति के सुचारू संचालन के परिणाम स्वरुप ही संभव हो सका है। युवावर्ग से बच्चों तक बड़ों से बुजुर्गों तक आज सभी टीकाकरण करने हेतु प्रयासरत हैं। सरकारी स्वास्थ्य ढाँचा अपनी पूर्ण क्षमताओं से टीकाकरण पर जोर दे रहा है। इसी का परिणाम है कि आज भारत में कोविड मरीजों की संख्या लगातार गिरती जा रही है।

कच्चे माल की निर्भरता :

भारतीय अर्थव्यवस्था मे कच्चे माल की आवश्यकता को पूरा करने में चीन का सबसे बड़ा योगदान है. वहाँ से हमें कच्चा माल, कलपुर्ज़े, मशीनरी, दवाइयों के साल्ट, प्लास्टिक साहित्य आदि, भारतीय बाज़ार की उत्पादन शीलता को गतिमान बनाये रखने के लिए अति महत्वपूर्ण है, किंतु विगत समय से चीन कोरोना का प्रमुख केंद्र रहा है और आज भी वहाँ पर कोरोना महामारी पर प्रक्रिया शुरू है। जिसका परिणाम वहाँ के व्यापार पर तथा विश्व निर्यात पर पड़ रहा है. इसी कारण भारतीय उत्पादको को भी कच्चे माल की बाधित आवाजाही का सामना करना पड़ रहा है. और खेल व्यवसाय भी इसी समस्या से जूझ रहा है.

आभासी खेलो के आयोजन का दौर :

कोरोना महामारी ने लॉकडाउन के काल मे लोगो को घरो मे बंद रहने पर मजबूर किया । उन्हे खेल-कूद और मनोरंजन के लिए भी घर पर उपलब्ध संसाधनो का उपयोग करना पड़ता था। इसी समय उदय हुआ आभासी खेलो के प्रचलन का । जिसके परिणाम स्वरूप ऑनलाईन गेमिंग, एप भी विविध प्रकार के मनोरंजक खेलो को मोबाइल फोन के माध्यम से व्यक्ति- व्यक्ति को परोसने लगे, लोगो को भी इनमे आनंद और मनोरंजन के साथ-साथ वैयक्तिक आभासी वास्तविकता का अहसास होने लगेगा । आज E-sports इसका जीवांत प्रचलित उदाहरण है । इसके कारण युवा वर्ग को अब खेलो के मैदानों का एक आभासी व नया विकल्प मिल गया है । ये आज भारतीय अर्थव्यवस्था मे अक बड़े व्यवसाय के रूप मे प्रचलित भी हो गया है

खेल व्यवसाय और कोरोना महामारी:

अपितु भारतीय अर्थव्यवस्था ही नहीं किंतु विश्व स्तर पर वैश्विक महामारी के कारण जगभर आर्थिक गतिविधियों पर विराम लगने के फलस्वरूप, सभी व्यवसाय व की दशा व दिशा दोनों ही तरीकों में चिंता जनक बनी हुई थी। जहाँ लॉकडाउन से भारतीय अर्थव्यवस्था को 8 से 10 लाख करोड़ रुपये का नुकसान होने का अनुमान लगाया जा रहा था वहीं इसके समर्थन में कई तथ्यों को भी नकारा नहीं जा सकता। देशभर में ज्यादातर कारखानों का बंद होना और व्यवसाय व कामकाज का ठप पड़ना, उड़ानों का परिचालन ना होना, परिवहन ना हो पाना भी इसका प्रमुख कारण है। किसी भी राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था में व्यवसायिक कार्यो का अनन्य साधारण महत्व होता है। व्यवसायिक स्वरूप से खेल व्यवसाय भी आर्थिक सहकारी माना जाता रहा है। जहां लॉकडाउन से सबसे ज्यादा मार कारीगरों पर पड़ी है। और उनके उपलब्ध ना होने से खेल व्यवसायों से जुड़े हर व्यक्ति की आर्थिक स्थिति भी कमजोर हो गई है। लॉकडाउन से जहां बेरोजगारी करीबन 23% तक बढ़ी थी और 5 करोड़ से ज्यादा प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष बेरोजगार हुए। इस गिरावट इस को स्वरूप में समझा जा सकता है। रिटेल सेक्टर 50% ऑटो/एंसीलरी 38% फार्मा 26% इंश्योरेंस 11% एकाउंटिंग फाइनेंस 10% आई-टी 9% BFSI 9% वैश्विक स्तर पर विविध खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन पर स्थगन के कारण खेल बाजार बुरी तरह प्रभावित हुआ। अकेले अमेरिका जैसे विकसित व शक्तिशाली, प्रबल अर्थव्यवस्था वाले राष्ट्र के खेल गतिविधियों पर रोक के कारण लगभग 11.85 लाख करोड़ रुपयों का खेल व्यवसाय प्रभावित

हुआ। ऐसा 2008 की आर्थिक मंदी के बाद पहली बार देखने को मिला। आए के सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत मीडिया, टीवी, के कॉन्ट्रैक्ट रद्द होने से ही 33,000 करोड़ों का नुकसान विदेशी खेल व्यवसाय को सहना पड़ा। खेल से खिलाड़ियों को मिलने वाले मानधन व भुगतानों में भारी कटौती की गई। कई खेल जैसे बास्केटबॉल, साकर, बेसबॉल, हॉकी, टेनिस गोल्फ सहित सभी खेलों की प्रतियोगिताओं को स्थगित करना पड़ा।

खेलों के आयोजन का स्थगित होना खेल व्यवसाय के क्षेत्र के लोगों की आमदनी पर स्थगन लगने जैसा था। आज भी मांग अनुरूप खपत में बढ़ चुके नकारात्मक अंतर को पाटने में 4 से 5 वर्ष लग सकते हैं। ऐसा अनुमान है। खेलों के पुनः आयोजन, भारतीय खेलों को प्राथमिकता और खेल व्यवसायियों को मदद निश्चिंत ही खेल व्यवसाय को अर्थव्यवस्था चक्र में पुनर्जीवित कर देगी.

निष्कर्ष:

महामारी एक भयंकर त्रासदी काल लेकर आती है. इससे कई सीख बदलाव के साथ समझे जाते हैं. कोरोना काल ने भी हमें कई बदलाव करने पर मजबूर किया है. और एक पुन शुरुआत करने की आशा दी है. जिस पर चलकर निश्चित ही भारत विश्वगुरु बन सकता है.

संदर्भ:

समाचार पत्र संग्रह दैनिक भास्कर हिंदी आवृत्ति
मीडिया रिपोर्ट NDTV न्यूज़
आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट भारत सरकार 2020-21